ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

वर्ष 44, अंक 39 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 9 अगस्त, 2021 से रविवार 15 अगस्त, 2021
विक्रमी सम्वत् 2078 सृष्टि सम्वत् 1960853122
दयानन्दाब्द : 198 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

भारतीय गणतन्त्र के 75वें स्वतन्त्रता दिवस पर विशेष

स्वाधीनता की सुरक्षा जरूरी

पुण्यमय भारत देश को विश्व सोने की चिड़िया के नाम से पुकारता था। विश्व गुरु होने का गौरव भी भारत को ही प्राप्त था। हमारी संस्कृति विश्व की आदर्श संस्कृति थीं, यहीं से विश्व के लोग शिक्षा प्राप्त करके अपने जीवन को गरिमा प्रदान करते थे। उस समय यहां पर उचित न्याय व्यवस्था थीं, धन-धान्य की कमी नहीं थी, खान-पान शुद्ध और पौष्टिक था, चारों तरफ सुख-शांति प्रेम सौहार्द का वातावरण था। लेकिन बहते समय के प्रवाह के साथ भारत वासियों का आचरण और व्यवहार बदला और देखते ही देखते हमारे भारत देश पर परतंत्रता के बादल मंडराने लगे और भारत माता परतंत्रता की बेडियो में जकडी गई। पहले हमारे ऊपर मुगलों ने शासन किया और फिर अंग्रेजों ने अपना अधिपत्य जमाया। लगभग एक हजार वर्षो की दासता के लंबे कालखंड के बाद 19वी सदी में महर्षि दयानंद जी का प्रादुर्भाव हुआ और उन्होंने देश की हालत को करीब से देखा और महसूस किया कि क्या यह

वही देश है जहां मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम, श्रीकृष्ण जैसे महापुरुषों ने जन्म लिया, जहां कपिल-कणाद, गौतम जैसे ऋषि मुनि जन्मे, जहां वेद-उपनिषद, दर्शन, स्मृतिग्रंथ रूपी ज्ञान संपदा का खजाना था, जहां यज्ञ-योग-स्वाध्याय, सत्संग-सेवा, साधना समर्पण की घर घर से खुशबू आती थी, वहां आज ढोंग-पाखंड, अविद्या का अंधकार है। चारों तरफ अज्ञान के कारण कुरीतियों के प्रहार है। ऐसी विषम परिस्थितियों में महर्षि ने आजादी का सिंहनाद किया, क्रांतिकारी भाषण दिये, निर्भीकता से स्वदेशी राज्य को श्रेष्ठ बताते हुए कहा कि चाहे विदेशी राजा कितना भी अच्छा हो लेकिन स्वदेशी से अच्छा कभी नहीं हो सकता। महर्षि दयानंद सरस्वती जी की प्रेरणा के प्रताप से देश में स्वाधीनता की क्रांति की लहर प्रवाहित होने लगीं, भारत माता को आजाद कराने वाले वीर सपूतों की टोलियां निकलने लगी, देश के रण बांकुरों ने सर पर कफन बांध लिया और इस तरह अनगिनत अमर बलिदानियों की शहादत के बल पर 15 अगस्त 1947 को हमारा देश आजाद हो गया।

हमारा देश आजाद तो हुआ लेकिन इसके साथ सबसे बड़ी विडम्बना यह रही कि जिन्होंने इस देश की स्वतन्त्रता के लिए कुर्बानियां दीं, अपना सर्वस्व न्यौछावर किया, वे आज़ाद भारत का सुख भोगने के लिए नहीं बचे। और जो बचे, उन्होंने स्वतन्त्रता के लिए कुछ भी दांव पर नहीं लगाया, इसलिए उन्हें स्वतन्त्रता की कीमत का बोध नहीं है। यही कारण है कि यह

- जारी पृष्ठ 3 पर

.....15 अगस्त 2021 को देश का 75वां स्वाधीनता दिवस धूमधाम से मनाया जाएगा। इस महान राष्ट्रीय पर्व की सभी देशवासियों को बहुत-बहुत बधाई और शुभकामनाएं। लेकिन यह पर्व हर वर्ष हम भारतवासियों में नई चेतना जगाने के लिए आता है, राष्ट्रभक्ति का संदेश देने आता है, परंतु हम लोग ऐसी गहरी नींद में सोए हुए हैं कि जागते ही नहीं। अगर समय रहते हम नहीं जागे, हमने अपने अमर शहीदों को स्मरण नहीं रखा, उनसे प्रेरणा नहीं ली, अपने देश के प्रति मन में प्रेम, समर्पण नहीं जगाया तो हमारी आजादी के सही मायने समाप्त होने में देर नहीं लगेगी। आज इतनी भयावह स्थिति से हम गुजर रहे हैं कि हमारी युवा पीढ़ी को अपने अमर शहीदों के पांच नाम भी याद नहीं है। इसलिए अपनी संतानों को आजादी के मायने सिखाओ, पराधीनता सबसे बड़ा दुःख है, स्वाधीनता की कीमत को याद रखना अनिवार्य है।

गड़ गए जो नींव में, उन पत्थरों को याद कर लो।
जो नहीं देते दिखाई, उन बहादुरों को याद कर लो।।

113वें बलिदान दिवस (11 अगस्त) पर विशेष

अमर शहीद खुदीराम बोस का बलिदान दिवस : शत-शत नमन

भारत के स्वाधीनता संग्राम के इतिहास में अनगिनत क्रांतिकारियों के अनेक साहसिक प्रेरणादायक कीर्तमान अंकित हैं। क्रांतिकारियों की सूची में ऐसा ही एक नाम है खुदीराम बोस का, जो मात्र 19 साल की उम्र में ही देश के लिए फांसी पर चढ़ गए। खुदीराम बोस का जन्म 3 दिसंबर 1889 को पश्चिम बंगाल के मिदनापुर में त्रैलोक्यनाथ बोस के यहां हुआ था। देश को आजाद कराने की ऐसी लगन लगी कि उन्होंने 9वीं कक्षा के बाद ही पढ़ाई छोड़ दी और स्वदेशी आंदोलन में कूद पड़े। इसके बाद वे रिवॉल्यूशनरी पार्टी के सदस्य बने और वंदेमातरम् पैम्फलेट वितरित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 1905 में बंगाल विभाजन के विरोध में चलाए गए आंदोलन में भी उन्होंने बढ़-चढ़कर भाग लिया। इतिहासवेत्ता मालती मलिक के अनुसार 28 फरवरी 1906 को खुदीराम बोस गिरफ्तार कर लिए गए लेकिन वे कैद से भाग निकले। लगभग 2 महीने बाद अप्रैल में वे फिर से पकड़े गए और 16 मई 1906 को उन्हें रिहा कर दिया गया।

6 दिसंबर 1907 को खुदीराम बोस ने नारायगढ़ रेलवे स्टेशन पर बंगाल के गवर्नर की विशेष ट्रेन पर हमला किया, परंतु गवर्नर बच गया। सन 1908 में उन्होंने दो अंग्रेज अधिकारियों वाट्सन और पैम्फायल्ट फुलर पर बम से हमला किया लेकिन वे भी बच निकले। खुदीराम बोस मुजफ्फरपुर के सेशन जज से बेहद खफा थे, क्योंकि उसने बंगाल के कई देशभक्तों को कड़ी सजा

जन्म 3 दिसम्बर 1889 — बलिदान 11 अगस्त 1908

देश के प्रति अतिशय अनन्य प्रेम भाव रखने वाले, अपना सर्वस्व न्योछावर करने वाले, खेलने कूदने की किशोरावस्था में हंसते हंसते सूली पर चढ़ने वाले, हमारे महान वीर बलिदानी खुदीराम बोस की शहादत को शत-शत नमन। - सम्पादक

दी थी। उन्होंने अपने साथी प्रफुल्लचंद चाकी के साथ मिलकर सेशन जज किंग्सफोर्ड से बदला लेने की योजना बनाई। दोनों मुजफ्फरपुर आए और 30 अप्रैल 1908 को सेशन जज की गाड़ी पर बम फेंक दिया, लेकिन उस समय गाड़ी में किंग्सफोर्ड की जगह उसकी परिचित दो यूरोपीय महिला कैनेडी और उसकी बेटी सवार थी। किंग्सफोर्ड के धोखे में दोनों महिलाएं मारी गई जिसका खुदीराम और प्रफुल्ल चंद चाकी को बेहद अफसोस हुआ।

अंग्रेज पुलिस उनके पीछे लगी और वैनी रेलवे स्टेशन पर उन्हें घेर लिया। अपने को पुलिस से घिरा देख प्रफुल्लचंद चाकी ने खुद को गोली मारकर अपनी शहादत दे दी जबकि खुदीराम पकड़े गए। 11 अगस्त 1908 को उन्हें मुजफ्फरपुर जेल में फांसी दे दी गई। उस समय उनकी उम्र मात्र 19 साल थी। फांसी के बाद खुदीराम बोस इतने लोकप्रिय हो गए कि बंगाल के

- जारी पृष्ठ 5 पर

देववाणी-संस्कृत

षड्रिपुदमनकर्त्ता इन्द्र

उलूकयातुं शुशुलूकयातुं जहि श्वयातुमुत कोकयातुम्।
सुपर्णयातुमुत गृध्रयातुं दृषदेव प्र मृण रक्ष इन्द्र।। - अथर्व. 8/4/22
ऋषिः चातनः।। देवता - मन्त्रोक्ता।। छन्दः त्रिष्टुप्।

शब्दार्थ - कामः -(हे जीव) **उलूकयातुम्** = उल्लू के समान आचरण (मोह) को **शुशुलूकयातुम्** =भेड़िये के चलन (क्रोध) को **श्वयातुम्** = कुत्ते - जैसे व्यवहार (मत्सर) को **उत** = और **कोकयातुम्** = चिड़िया के आचरण (काम) को **जहि** = नष्ट कर दे। **सुपर्णयातुम्** = बाज़ की चाल (मद) को **उत** = तथा **गृध्रयातुम्** = गिद्ध-जैसे बर्ताव (लोभ) को भी **रक्षः** = इन छहों में से एक-एक राक्षक को **इन्द्र** = हे आत्मन्! तू **दृषदा इव प्रमृण** = अपनी दारणशक्ति द्वारा इस तरह विनष्ट कर दे जैसे शिला से मिट्टी का ढेला या मिट्टी का बर्तन फूट जाता है।

विनय- हे जीव! तूने दुर्लभ मनुष्य-जन्म को पाकर भी अभी तक अपने में से पशुताओं को नहीं निकाला हैं तुझ में छह प्रकार के पशुत्व अबतक बसे हुए हैं। मनुष्य-योनि ही वह उच्च योनि है जिसमें आत्मशक्ति जाग्रत की जा सकती है, अतः तू अब अपने इन्द्रत्व को पहचान और अपनी आत्मशक्ति से इन 'षड्रिपुओं' को, छह राक्षसों को, अपने में से विनष्ट कर दे। इनसे अपनी रक्षा करनी चाहिए, अतः ये ही तो असली राक्षस हैं जो तेरे वध्य हैं तुझ में कभी-कभी जो कोकपक्षी की भांति भयंकर कामविकार का राक्षस आता है, उसे तू मार डाल। तू तो संयम कर सकने वाला मनुष्य है। तू तो कभी क्रोधाविष्ट होकर अपने भाइयों पर निर्दय अत्याचार कर डालता है, यह तुझमें भेड़ियापन है। जो भी कुछ द्वेष व हिंसा तू करता है वह सब तुझ मनुष्य में जीवों को मारकर खा डालनेवाले भेड़िए का-सा आचरण है और जिस प्रकार गिद्ध मरते-सिसकते प्राणियों के मांस पर ही दृष्टि रखता है, उसी प्रकार तुझ में दूसरों के नाश पर पुष्ट होने की जो घृणित, लोभमयी वृत्ति उठती है यह भी एक बड़ा दुष्ट राक्षस है; तू इसे भी नष्ट कर दे। एवं, तू उल्लू के आचरण को भी छोड़ दे। जैसे उल्लू को प्रकाश से घृणा होती है उसी प्रकार जो तुझमें तमोमयावस्था में पड़े रहने की प्रवृत्ति और सात्त्विक भाव तथा ज्ञानप्रकाश की चर्चा देखता है, वहां से तू दूर भागा करता है- यह जो प्रवृत्ति है, इसे तू त्याग दे। इसी तरह अहंकार बड़ा बुरा राक्षस है, बाज़ (गरुड़) के समान गर्व= घमण्ड के भाव को भी अब तुझे सर्वथा निकाल देना होगा और तू अब कुत्तापन कब तक करता रहेगा। कुत्तों की तरह आपस में लड़ना और पराये के सामने दुम हिलाना, या जैसे कुत्ता अपने वमन किये को भी चाट लेता है वैसे व्रत करके त्यागी हुई वस्तु को भी फिर ग्रहण कर लेना, इस प्रकार की पशुताएं तू कब तक करता रहेगा? तू तो इन्द्र = आत्मा है, तेरी आत्म-शक्ति के सामने ये विकार कैसे ठहर सकते हैं? जैसे दृषत् अर्थात् शिला पर टकराकर मिट्टी का ढेला चूर-चूर हो जाता है वैसे ही, हे आत्मन्, हे इन्द्र! तेरी भी एक 'मही दृषत्' दारणशक्ति है, तू इसे पहचान!

-: साभार :-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

फिलिस्तीन की चिन्ता है अफगानिस्तान की क्यों नहीं?

.....दो घटनाएं होती हैं एक घटना आतंकी संगठन हमास और इजराइल के बीच उसे लेकर सोशल मीडिया पर ऐसा हौव्वा बनाया जाता है कि मानो इजराइल इस संसार को तबाह कर रहा है और लोकतंत्र की हत्या कर रहा है। तो वहीं दूसरी तरफ अफगानिस्तान की राजधानी काबुल में एक के बाद एक विस्फोट जिनमें बच्चे महिलाये और ज्यादातर स्कूल की लड़कियां मारी जाती है। एक आतंकी संगठन पूरी दुनिया के सामने एक लोकतान्त्रिक सरकार को चुनौती देता है। लेकिन दोगलेपन के जहर से पीड़ित मजहबी मीडिया नक्सली वामपंथी लिबरल बुद्धिजीवियों के मुंह से कट्टरपंथी सुन्नी संगठन की आलोचना में शब्द नहीं निकलते। दुनिया का तमाम मीडिया तालिबान की हिंसा को ऐसे पेश कर रहा है जैसे वह दुनिया को नई चेतना नया लोकतंत्र और संविधान देने वाला हो।.....

अंग्रेजी में एक कहावत है कि हिप्पोक्रेसी इज ए टरीब्यूट व्हिच कीप गिविंग टाइम टू टाइम। यानि पाखंड एक श्रद्धांजली है जिसे समय-समय पर देते रहिये। इसी साल की बात है तारीख थी 16 मई फिलिस्तीन को लेकर 57 सदस्यीय इस्लामिक देशों के संगठन ओआईसी ने आतंकी संगठन हमास के खिलाफ इजरायल की कार्रवाई की निंदा करते हुए एक संयुक्त बयान जारी किया था। जिसमें कहा गया था इजरायल बेगुनाह फिलिस्तीनियों की जानें लेना बंद करे।

जबकि लड़ाई फलस्तीनी आतंकी संगठन हमास और संप्रभु राष्ट्र इसराइल के बीच थी। लेकिन फिर भी 16 मई को ही अमेरिका में इस्लाम समर्थको ने गाजा पट्टी पर इसराइली हवाई हमले खत्म करने की मांग को लेकर लोस एंजिलिस बोस्टन फिलाडेल्फिया समेत कई अन्य अमेरिकी शहरों में प्रदर्शन किये। हजारों लोगों ने फलस्तीन आजाद करो और इन्तिफादा विद्रोह कायम रहे के पोस्टर पकड रखे थे। अब पिछले एक महीने से अफगानिस्तान में तालिबानी आतंकी कहर मचा रहे हैं लेकिन कोई विरोध का पोस्टर कहीं चिपका दिखाई नहीं दे रहा है। जो इमरान खान आँखों में मगरमच्छ के आंसू लेकर कह रहा था वी स्टेंड विद गाजा वी स्टेंड विद फलस्तीन अब उसका ट्विटर अकाउंट खामोश है। बल्कि वह खुलेआम अफगान सरकार को धमकी दे रहा है अगर तालिबान के खिलाफ हवाई हमले किये तो हम चुप नहीं बैठेंगे।

जबकि इसी वर्ष 28 मई को खबर आई थी कि गाजा पर हवाई हमले को लेकर तुर्की और पाकिस्तान इजरायल के खिलाफ अंतरराष्ट्रीय समुदाय को लामबंद करने में जुट गये हैं। पाकिस्तान के विदेश मंत्री शाह महमूद कुरैशी संयुक्त राष्ट्र संघ की आमसभा में इस मुद्दे पर समर्थन जुटाने के लिए तुर्की रवाना हो गये। पाकिस्तान के विदेश मंत्री ने इस बीच अपने देशवासियों से भी एक अपील भी करी थी कि बड़े बड़े प्रदर्शन करो सेव गाजा सेव फलिस्तीन के पोस्टर लहराओ।

लेकिन अब काबुल पर मचे कहर और 27 अफगानी बच्चों की मौत किसी को दिखाई नहीं दे रही है। इससे साफ पता चलता है कि अगर मुसलमान पर गैर मुसलमान हमला करें तो उस पर वामपंथियों और इस्लामिक लोगों का शोर मचाना जरूरी होना चाहिए। इसके अलावा जब मुस्लिम गैर मुस्लिम पर हमला करें उसे जिहाद कहना चाहिए लेकिन जब कोई तालिबान काबुल पर हमला करे, या जब कोई आईएसआईएस सीरिया या इराक में तबाही मचाये उस पर खामोश हो जाना चाहिए। मसलन गाजा पर रोना चाहिए काबुल पर हँसना चाहिए आज यही सब हो भी रहा है।

हमास पर हमले के वक्त दिल्ली काँग्रेस के वीपी अली मेहदी ने यहूदी राष्ट्र के प्रति इजरायल के विनाश की कामना करते हुए ट्विटर पर कहा था अल्लाह इजरायल को नष्ट कर देगा इंशाल्लाह अल्ला हु अकबर। असदुद्दीन ओवैसी ने भी एक वीडियो को साझा करते हुए कहा था कि फिलिस्तीन को तब कोई रक्षक नहीं चाहिए जब उनके पास अल्लाह हों। और ट्वीट करते हुए लिखा हमको किसी मुमालिक या बादशाह की जरूरत नहीं है फिलीस्तीन के लिए, हमारा अल्लाह हमारे लिए काफी है। इसके बाद काँग्रेस नेता सलमान निजामी ने भी फिलिस्तीन को बचाने के नारे लगाने लगे और एक हवाई हमले का वीडियो साझा करते हुए, ट्वीट किया था कि उनका खून इजरायल के हाथों में लगा है, हम नहीं भूलेंगे! सेव फलिस्तीन।

जब इसराइल के खिलाफ करने कहने को कुछ नहीं मिला तो कोई शरजील उस्मानी सामने आया लोगों को प्यूमा और एचपी जैसे ब्रांडों का बहिष्कार करने के लिए कहने लगा। और कैटरपिलर बुलडोजर पर प्रतिबंध लगाने मांग भी क्योंकि क्योंकि इसका उपयोग फिलिस्तीनी घरों और खेतों के विध्वंस के लिए किया जाता है। बात यहाँ बनी तो उस्मानी डेथ टू ऑक्यूपेशन अभियान में भी शामिल हो गया जो कश्मीर और फिलिस्तीन में विदेशी कब्जे से मुक्ति के लिए कहता है।

सिर्फ इतना ही नहीं फिल्म अभिनेत्री स्वरा भास्कर भी सामने आई और अपने ट्वीट में इजरायल को लानते भेजी। इसके बाद भारत के चुनाव आयोग के साथ पंजीकृत होने का दावा करने वाली टीपू सुल्तान पार्टी ने अपना ज्ञान फेंकते हुए कहा कि कुछ दशकों पहले तक इज़राइल एक राष्ट्र के रूप में मौजूद नहीं था और ट्विटर पर बाय कोट इसराइल अभियान चलाने लग गया। अब कोई इस टीपू सुल्तान पार्टी से पूछे कि कुछ दशकों पहले तक तो पाकिस्तान और बांग्लादेश भी नहीं थे कभी ट्विटर पर बायकाट पाकिस्तान या बांग्लादेश का भी अभियान चलाया क्या?

यानि अब आप समझिए की दो घटनाएं होती हैं एक घटना आतंकी संगठन हमास और इजराइल के बीच उसे लेकर सोशल मीडिया पर ऐसा हौव्वा बनाया जाता है कि मानो इजराइल इस संसार को तबाह कर रहा है और लोकतंत्र की हत्या कर रहा है। तो वहीं दूसरी तरफ अफगानिस्तान की राजधानी काबुल में एक के बाद एक विस्फोट जिनमें बच्चे महिलाये और ज्यादातर स्कूल की लड़कियां मारी जाती है। एक आतंकी संगठन पूरी दुनिया के सामने एक लोकतान्त्रिक सरकार को चुनौती देता है। लेकिन दोगलेपन के जहर से पीड़ित मजहबी मीडिया नक्सली वामपंथी लिबरल बुद्धिजीवियों के मुंह से कट्टरपंथी सुन्नी संगठन की आलोचना में शब्द नहीं निकलते। दुनिया का तमाम मीडिया तालिबान की हिंसा को ऐसे पेश कर रहा है जैसे वह दुनिया को नई चेतना नया लोकतंत्र और संविधान देने वाला हो।

- शेष पृष्ठ 7 पर

आपके लिए अनुपयोगी वस्त्र, जूते-चप्पल, स्टेशनरी के सामान, खिलौने आदि को जरुरतमंद लोगों तक पहुंचाने की विशेष योजना

आओ, हम जुड़ें 'सहयोग' से : सच्चे - अच्छे योग से

"सहयोग" सेवा यज्ञ हमारा
जरूरतमंदों को मिला सहारा
आओ, हाथ बढ़ाएं- सहयोगी बन जाएं

पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी की प्रेरणा से अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ द्वारा संचालित सहयोग एक ऐसी कल्याणकारी दिव्य योजना है, जिससे लाखों लोग लगातार लाभ प्राप्त कर रहे हैं।

सहयोग : क्या है योजना?

सहयोग एक चार अक्षरों का छोटा-सा शब्द है, लेकिन इसकी महिमा अपरमपार है। सहयोग के माध्यम से शहरों, नगरों और आदिवासी क्षेत्रों में अभावग्रस्त मनुष्यों की सेवा सहायता का एक महान अभियान गतिशील है। यह सर्वविदित है कि अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ द्वारा मानव सेवा के कई विशेष कार्य काफी लंबे समय से चल रहे हैं। इन सेवाकार्यों को गति देते हुए संघ के अधिकारियों ने गीरब व आदिवासी क्षेत्रों में ईश्वर की अमृत संतान मनुष्यों को बड़ी तंगहाली और बदहाली में करीब से व्यथित जीवन जीते देखा तो ज्ञात हुआ कि विश्व की छटी अर्थव्यवस्था के रूप में विख्यात भारत में आज भी लोग अपनी मूलभूत जरूरतों से महरूम हैं। तन ढांपने के लिए वस्त्र और जूते, चप्पल आदि की जरूरतें भी लोगों को रुला रही हैं। यह देखकर आर्य नेताओं को ऋषि दयानंद के महान जीवन से जुड़ी घटना याद आ गई कि किस तरह एक निर्धन मां ने अपने बच्चे के मृत शरीर से कफन को उतार कर उसे नग्न ही जल में प्रवाहित कर दिया था। इस मार्मिक घटना से ऋषि का कोमल हृदय द्रवित हो उठा और उन्होंने अपने शरीर पर वस्त्र धारण करना ही बंद कर दिया। ऋषि दयानंद के अनुयायी आर्यजनों ने महान कर्मयोगी महाशय धर्मपाल जी से निर्धन बस्तियों में और आदिवासी बंधुओं की इस पीड़ा के विषय में विचार-विमर्श कर के आदिवासी क्षेत्रों में या अन्य किसी भी स्थान पर जरूरतमंदों की पहचान कर उन्हें पुराने किंतु उपयोगी वस्त्र जूते, चप्पल, पुस्तकें, खिलौने, स्टेशनरी आदि समानों को उन तक पहुंचाने के लिए **"सहयोग"** नामक योजना का शुभारंभ किया। जो कि आज तीव्र गति से जरूरतमंद छात्रों, युवाओं और वृद्धजनों को लगातार सहयोग प्रदान कर रहा है।

कैसे बनें "सहयोग" के सदस्य?

⋆ सहयोग में सहभागिता के लिए पहला बिंदु है कि आप जिन वस्त्रों का प्रयोग नहीं करते, उन उपयोगी वस्त्रों को स्वच्छ करके, प्रेस कराके, पैकट में रखकर अपनी नजदीकी आर्यसमाज अथवा सहयोग के सेंटर पर पहुंचाएं ।

⋆ इसी तरह से आप जिन जूते, चप्पलों का प्रयोग नहीं करते वे दूसरों के काम आने लायक हों तो उन्हें पोलिश कराके उन्हें भी पैकट में रखें और वस्त्रों की तरह सहयोग के लिए सेंटर पर भेजें।

⋆ इस क्रम में आप खिलौने, पुस्तक, कॉपी, पैन, पेंसिल आदि उपयोगी वस्तुएं भी विधिवत जैसे किसी को गिफ्ट दिया जाता है वैसे ही पैक करके सहयोग के सहयोगी बनें।

इस सारे समान को सहयोग स्वयं अपनी गाड़ी द्वारा प्राप्त कर लेगा और आप सहयोग के अनन्य सहयोगी सदस्य बन जाएंगे।

निवेदन :- आधुनिक परिवेश में आर्यजनों को ऐसी विभिन्न सेवा योजनाओं को क्रियान्वित करना ही होगा, क्योंकि मानवता आर्य समाज को पुकार रही है, अन्य अनेक तथाकथित दिखावटी, बनावटी संस्थाएं सेवा के नाम पर बढ़ चढ़कर ढोंग

कर रही हैं, लोभ-लालच में भोले-भाले निर्धन लोगों कों विधर्मी बनाने पर तुली हुई हैं। अत: हमें अपने कर्तव्यों को समझना होगा और आर्य समाज की और से निरंतर सृजनात्मक कार्यो को गति देनी होगी। इसलिए आप दिल्ली अथवा एन सी आर में जहां भी रहते हैं वहीं अपने आर्य समाज में, आर्य शिक्षण संस्थान में या अपने गली-मोहल्ले में सहयोग का सेंटर बनाएं और इस अनुपम सेवा को वृहद अभियान का रूप देने में सहयोगी बनें दें।

आओ, करें सहयोग,
शुभ कर्मो का योग

अधिक जानकारी प्राप्त करने, सहयोग से जुड़ने के लिए अथवा आप द्वारा एकत्र किया गया सहयोग जरुरतमंदों तक पहुंचाने के लिए मो. नं. 9540050322 पर सम्पर्क। - ***व्यवस्थापक***

प्रथम पृष्ठ का शेष

स्वाधीनता की सुरक्षा जरूरी.....

देश अपनी स्वतन्त्रता का लाभ नहीं ले पाया। आज़ादी के सात दशक से भी अधिक वर्ष बीत जाने के बाद इस देश में आज भी अनेक असमानताएं विद्यमान हैं कई तरह की अव्यवस्थाएं आज भी है। यहां कदम-कदम पर भेद भावपूर्ण नीतियां दिखाई देती हैं, आज भी शिक्षा, चिकित्सा, सुरक्षा, न्याय व्यवस्था आदि में बड़ी भारी खामियां हैं।

15 अगस्त 2021 को देश का 75वां स्वाधीनता दिवस धूमधाम से मनाया जाएगा। इस महान राष्ट्रीय पर्व की सभी देशवासियों को बहुत-बहुत बधाई और शुभकामनाएं। लेकिन यह पर्व हर वर्ष हम भारतवासियों में नई चेतना जगाने के लिए आता है, राष्ट्रभक्ति का संदेश देने आता है, परंतु हम लोग ऐसी गहरी नींद में सोए हुए हैं कि जागते ही नहीं। अगर समय रहते हम नहीं जागे, हमने अपने अमर शहीदों को स्मरण नहीं रखा, उनसे प्रेरणा नहीं ली, अपने देश के प्रति मन में प्रेम समर्पण नहीं जगाया तो हमारी आजादी के सही मायने समाप्त होने में देर नहीं लगेगी। आज इतनी भयावह स्थिति से हम गुजर रहे हैं कि हमारी युवा पीढ़ी को अपने अमर शहीदों के पांच नाम भी याद नहीं हैं। इसलिए अपनी संतानों को आजादी के मायने सिखाओ, पराधीनता सबसे बड़ा दु:ख है, स्वाीधनता के स्वाद में इसकी कीमत को समझना अनिवार्य है।

गड़ गए जो नींव में,
उन पत्थरों को याद कर लो।
जो नहीं देते दिखाई,
उन बहादुरों को याद कर लो।।

अपने बलिदान से जिन्होंने आज़ादी का मार्ग प्रशस्त किया; उनमें चाहे फांसी के फन्दे को चूमने वाला वीर भगतसिंह हो या बंजारा बन कर देश-विदेश में भटकने वाला जय-हिन्द का नारा देने वाले नेताजी सुभाषचन्द्र बोस हों, चन्द्रशेखर आजाद हों या रामप्रसाद बिस्मिल। उन सभी महान् लोगों को याद करने का पावन दिन पन्द्रह अगस्त है। जिन्होंने आजादी का स्वप्न देखा, जिन्होंने स्वयं यातनाएं सहीं और आज़ादी के लिए अपने प्राणों की आहुति तक दे डाली। वे असाधारण महाबलिदानी वीर थे।

सुख-सुविधा में जीने वाले बहुत लोग होते हैं। अपने ही स्वार्थो में जीवित रहने वाले भी दुनिया में बहुत हैं। अपने परिवार की मोह-ममता में पड़कर अपने ही परिवार का पालन-पोषण करने वाले लोग भी बहुत हैं और अपनों के लिए अपनी विरासत करने वाले लोग भी बहुत हैं। लेकिन देश की आन-बान और शान के लिए अपने प्राणों की आहुति देने वाले और देश की खुशी के लिए अपनी विरासत को छोड़ने वाले लोग दुनिया में बहुत कम हुआ करते हैं। देश पर मर मिटने वाले लोग इस संसार में सबके पूजनीय एवं आदर्श हुआ करते हैं। वे देश के उज्ज्वल नक्षत्र होते हैं।

भारत देश का तिरंगा झंडा जिसमें शांति, समृद्धि और प्रगति का सन्देश सुनाई देता है। यदि साधारणतया इसे देखें तो यह एक कपड़े का टुकड़ा मात्र है। लेकिन भावनाओं से देखें हमारा यह तिरंगा झण्डा देश-प्रेम का, शौर्य का और आन-बान और शान का प्रतीक है। लेकिन यह झण्डा तभी ऊंचा होता है जब डण्डा ऊंचा होता है। अगर डण्डा ऊंचा नहीं है तो झण्डा भी ऊंचा नहीं हो सकता। जब तक आपके अन्दर शक्ति से ताकत से अपनी बात मनवाने की हिम्मत नहीं होगी, तब तक 'सत्यमेव जयते' का नारा सत्य नहीं हो पाएगा। इसलिए आज भारत में शक्ति की बहुत आवश्यकता है। शक्ति के सुसंगठित होने पर ही सत्य का प्रचार-प्रसार हो पाता है।

स्वामी श्रद्धानन्दजी ने कहा था-आज आवश्यकता है मुट्ठी बांधने की। हम इकट्ठे होंगे तो आजादी मिलेगी। हमें आज़ादी तो मिल गई; पर मिली आधी-अधूरी। पूरी आज़ादी नहीं मिली। आज फिर शैतानी ताकते सिर उठा रही है छदम युद्ध देश के भीतर ही चल रहा है, हमारी संस्कृति और सभ्यता को लोग नष्ट करने में लगे हैं, हिंदू सोया हुआ है, सपनों में खोया हुआ है, इसे नींद से जागना होगा, अपने आपको पहचानना होगा, अपने पूर्वजों से शिक्षा लेनी होगी तभी स्वाधीनता सुरक्षित रहेगी। दुर्भाग्य की बात है कि जो आधी-अधूरी आज़ादी हमें प्राप्त हुई, उसे भी सुरक्षित रहने नहीं दिया जा रहा है। नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने कहा था- "आज़ादी प्राप्त करना कठिन नहीं है, लेकिन आज़ादी को सुरक्षित रखना ज़रूर कठिन है। आने वाले समय में इसके लिए बड़ी कुर्बानियां देनी होंगी।" आज भाषा के नाम पर, वेशभूषा के नाम पर, भावना के नाम पर समाज को बांटा जा रहा है। अपनी आज़ादी को सुरक्षित रखने की बहुत आवश्यकता है। उसके लिए कुर्बानियां ज़रूर देनी पड़ेंगी। अगर अपनी आज़ादी की सुरक्षा चाहते हो तो अपने बच्चों को अपना इतिहास सुनाओ, अपने वीरों की शौर्य-गाथा, सुनाओ, जिससे देशभक्ति की घुट्टी हमारे अन्दर पहुंचे। फिर से कोई सुभाष, भगतसिंह, कोई रामप्रसाद हमारे बीच पैदा हो। क्योंकि हमारी आज़ादी इन्हीं के कारण सुरक्षित रह सकती है। दुनिया में भारत से बढ़कर कोई दूसरा देश नहीं है। भारत की संस्कृति से बढ़कर संसार में कोई दूसरी संस्कृति नहीं है। लेकिन दुर्भाग्य देखिए कि इसे खोखला करने वाले दीमक आज भी हमारे देश में मौजूद हैं। उन वीरों की जय ज़रूर बोलना और उन बलिदानी वीरों को ज़रूर याद करना, जिन्होंने देश की आन-बान और शान के लिए अपने प्राण तक न्यौछावर कर दिए। यह हमेशा ध्यान रख्ना जो कौम अपने शहीदों को याद किया करती है, वह कौम हमेशा जिन्दा रहती है। जो कौम अपने शहीदों को भूल जाती है, वह कभी जिन्दा नहीं रह पाती।

नि:शुल्क सत्यार्थ प्रकाश वितरण योजना

आइए, सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार-प्रसार को मिलकर करें गति प्रदान

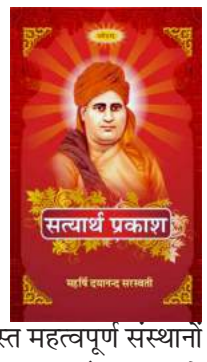

मानव समाज को सन्मार्ग दिखाने वाले महर्षि देव दयानन्द जी द्वारा रचित सत्यार्थ प्रकाश उनकी विशेष रचनाओं में से एक प्रमुख रचना है। सत्यार्थ प्रकाश को पढ़कर लाखों लोगों के जीवन प्रकाशित हुए हैं। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने सत्यार्थ प्रकाश को जन-जन तक पहुंचाने का संकल्प धारण किया हुआ है। इस लोकोपकारी कार्य के लिए सभा ने स्थाई निधि की योजना बनाई है। जिसके ब्याज से प्रकाशित सत्यार्थ प्रकाश लगातार विश्व की संस्थाओं में भेजे जाते हैं। सभा के प्रयास और आप सबके सहयोग से सत्यार्थ प्रकाश भारत के समस्त महत्वपूर्ण संस्थानों में, पुस्तकालयों में तथा सभी दूतावासों में, स्कूल-कालेजों में लगातार पहुंचाए जा रहे हैं। इस महान कार्य में हमें निरंतर सफलता मिल रही है।

सभा का प्रयास है कि सत्यार्थ प्रकाश भारत के 135 करोड़ नागरिकों के हाथों में पहुंचे तथा विश्व के 700 करोड़ से ज्यादा लोगों के जीवन स्वामी दयानंद जी की इस अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश से प्रकाशित हों। आइए, सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार-प्रसार को मिलकर गति प्रदान करें।

- ⋆ इसके लिए आप अपने आर्यसमाज की ओर से या संस्था की ओर से अथवा अपने परिवार की ओर से, अपने बड़े-बुजुर्गों के जन्मदिवस/स्मृति में एक स्थाई निधि बनवाएं। जिससे लगातार यह सेवा कार्य चलता रहे।
- ⋆ अपने बच्चों के जन्मदिन पर, विवाह की वर्षगांठ पर स्वजनों को भेंट करें और सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार में सहयोग करें।
- ⋆ इस महान परोपकारी सेवा में कुछ-न-कुछ आर्थिक सहयोग अवश्य दें।

अधिक जानकारी के लिए अथवा सहयोग हेतु सम्पर्क करें -

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15- हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

Email : aryasabha@yahoo.com

भारत के सांस्कृतिक सन्तुलन की रक्षा - हम सब का दायित्व

इन पांच पुस्तकों को अवश्य पढ़ें

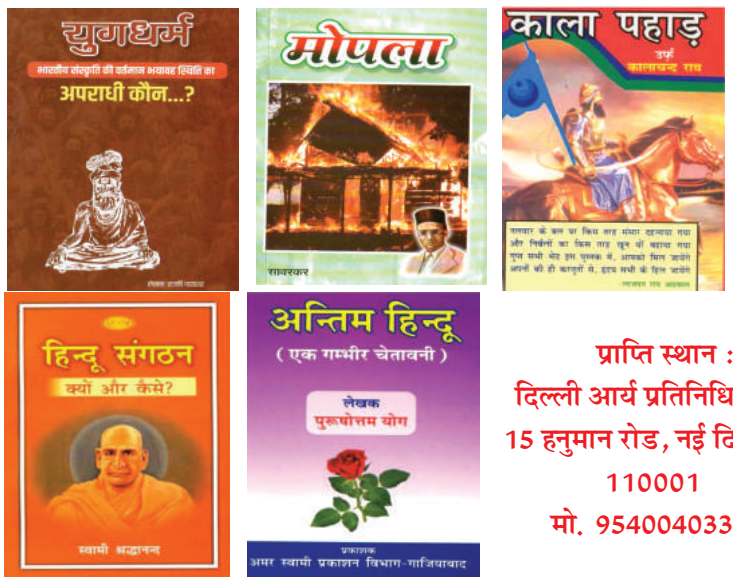

प्राप्ति स्थान :
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 110001
मो. 9540040339

सार्वदेशिक सभा के निर्देशन में घर-घर जाकर किया जाएगा
हैदराबाद सत्याग्रहियों का सम्मान

आर्यजनों से जीवित सत्याग्रहियों के नाम एवं पते भेजने का अनुरोध

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से हैदराबाद सत्याग्रह में भाग लेने वाले समस्त जीवित सत्याग्रहियों को सम्मनित करने का निर्णय लिया गया है। यह सम्मान कार्यक्रम प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं के माध्यम उनके आवास पर ही जाकर किया जाएगा। इस हेतु समस्त आर्यजनों, आर्यसमाजों, आर्य प्रतिनिधि सभाओं से जीवित सत्याग्रहियों के नाम, पते एवं सम्पर्क सूत्र सार्वदेशिक सभा को भेजने का अनुरोध किया गया है। आपसे निवेदन कि यदि आपके सम्पर्क में या जान-पहचान में कोई ऐसे सत्याग्रही महानुभाव हों तो कृपया उनकी सूचना **'मन्त्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001'** के पते पर भिजवाने की कृपा करें।

- सुरेशचन्द्र आर्य, प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की योजनाओं के लिए सहयोग/दान अब और भी आसान: QR कोड स्कैन करते ही होगा भुगतान

आपको जानकर हर्ष होगा कि बैंक द्वारा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को डिजिटल पेमेंट हेतु कोड़ जारी किया गया है। अब आप किसी भी पेमेंट माध्यम - पेटीएम, फोन पे, गूगल पे, मास्टर/वीजा रुपये, भीम पे - से दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित किसी भी योजना/प्रकल्प के लिए सहयोग एवं दान राशि का भुगतान केवल मात्र क्यू.आर. कोड को स्कैन करके कभी भी-कहीं से भी कर सकते हैं।

आप इस कोड के माध्यम अपने आर्यसमाज की ओर से दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को देय दशांश एवं वेद प्रचार राशियों का भी भुगतान कर सकते हैं।

आप द्वारा इसके माध्यम से भेजी गई राशि तत्काल सभा को प्राप्त हो जाएगी। कृपया भुगतान करते ही आपके पास जो मैसेज आए उसका स्क्रीन शॉट लेकर अथवा सीधे उस मैसेज को 9540040388 पर व्हाट्एप्प अथवा टेलिग्राम कर दें, जिससे आपको तुरन्त रसीद जारी की जा सके।

- विनय आर्य, महामन्त्री (9958174441)

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में आर्य उप प्रतिनिधि सभा कोटा द्वारा बच्चों की यज्ञ प्रतियोगिता सम्पन्न

यज्ञ प्रतियोगिताओं से परिवारों में यज्ञ करने की परम्परा बनेगी, बच्चें सुसंस्कारित होगें - श्री धर्मपाल आर्य

कोटा, 13 जुलाई। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा व दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में आर्य उप प्रतिनिधि सभा कोटा सम्भाग द्वारा बच्चों में यज्ञ के प्रति श्रद्धा व संस्कार बढ़ाने के लिए 6 से 12 वर्ष तक के बच्चों के लिए राष्ट्रीय स्तर पर यज्ञ प्रतियोगिता का ऑनलाइन आयोजन किया गया। आर्य समाज कोटा के सम्भागीय प्रधान श्री अर्जुनदेव चढ्डा व महामंत्री श्री अरविन्द पाण्डेय द्वारा यह आयोजन करवाया गया। उन्होंने बताया कि 6 वर्ष से 12 वर्ष तक के बालक-बालिकाओं के अलग-अलग समूह बनाए गए थे। प्रतियोगियों द्वारा भेजे गए वीडियों को क्रमबद्ध चिन्हित किया गया।

निर्णायक मण्डल में वैदिक विदुषी डॉ सुदेश आहुजा, वैदिक विद्वान आचार्य अग्निमित्र शास्त्री, आचार्य शोभाराम आर्य शामिल थे। जिन्होंने क्रमानुसार सारे वीडियो बड़ी स्क्रीन पर देखते हुए वेश भूषा, यज्ञ कुण्ड सज्जा, मंत्रोच्चार तथा शारीरिक क्रियाओं आदि से मूल्यांकन अलग-अलग समूहों में बांट करके आयोजको को दिया। तदनुसार अंकों के आधार पर सूचीबद्ध करके दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को भिजवाई गई।

कोटा से भेजी अंक तालिका के आधार पर श्री धर्मपाल आर्य जी, प्रधान, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य सतीश चड्डा, महामंत्री, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य एवं कार्यक्रम संयोजक ने 1अगस्त, 2021को यज्ञ प्रतियोगिता में भाग लेने वाले प्रतियोगिता के विजेताओं के नाम आर्य संदेश टीवी पर दिल्ली से,

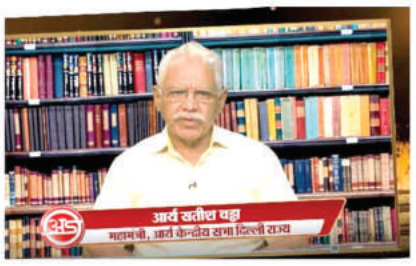

घोषित किए।

बालक वर्ग -

प्रथम - श्री पवित्र सिंह, आर्मी पब्लिक स्कूल, कोटा

द्वितीय - श्री सौनिक जालुई श्रीमती आर.एस.बी. विद्या मन्दिर, जुहु

तृतीय - श्री सुयश आर्य ए.पी.जे. स्कूल, मुम्बई - श्री आर्ष आर्य, दिल्ली

सान्तवना पुरस्कार - श्री नैतिक आर्य (एस.वी.एम. स्कूल, आगरा), श्री दक्ष भारद्वाज (डी.ए.वी. स्कूल, कोटा)

बालिका वर्ग -

प्रथम - कुमारी आहना शेट्टी, श्रीमती आर.एस.बी. विद्या मन्दिर, जुहु

द्वितीय - कुमारी भूमिका कुशवाह स्प्रिंगकल्स स्कूल, कोटा

तृतीय - कुमारी वर्चसी आर्या दिल्ली
कुमारी दुर्ग शिखा आर्या डी.ए.वी. स्कूल, कोटा

सान्तवना पुरस्कार - कुमारी अध्वरा आर्या (डी.ए.वी. स्कूल, कोटा), कुमारी भाविका आर्या (डी.ए.वी. स्कूल, कोटा), कुमारी पूर्वा सिंह (शिव ज्योति स्कूल, कोटा)

श्री धर्मपाल आर्य तथा आर्य सतीश चड्डा ने बताया कि प्रतियोगिता में भाग लेने वाले सभी प्रतियोगियों को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा व दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से प्रशस्ति पत्र दिये जायेंगे।

श्री धर्मपाल आर्य ने कहा कि दोनों समूहों में प्रथम विजेता को 2100 रु, द्वितीय विजेता को 1500रु, तृतीय विजेता को 1100रु. व सान्तवना पुरस्कार 500रु. की राशि सभी विजेताओं को प्रदान की जायेगी।

श्री धर्मपाल आर्य जी ने इस अवसर पर कहा कि निश्चय ही इस प्रकार यज्ञ प्रतियोगिता से परिवारजन अपने बच्चों को यज्ञ करने के लिए प्रेरित करेंगे। उन्होंने कहा कि बच्चों में परोपकार की भावना जागृत करने के लिए यज्ञ एक श्रेष्ठ कर्म है, जिसमें आहुतियां देने से वे प्रेरित होंगे। परिवार मे यज्ञ करने की परम्परा बनेगी और बच्चे सुसंस्कारित होगे।

श्री धर्मपाल आर्य, प्रधान व श्री विनय आर्य, महामंत्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा तथा आर्य सतीश चड्डा, महामंत्री, केन्द्रीय आर्य सभा दिल्ली राज्य ने आभार व्यक्त करते हुए कहा कि श्री अर्जुनदेव चड्डा जी, प्रधान तथा श्री अरविन्द पाण्डेय, महामंत्री, आप दोनों का यह बहुत अच्छा व सफल प्रयास रहा है। इस शुभारंभ से भविष्य में इसी प्रकार विभिन्न प्रतियोगिता को और अधिक अच्छे व व्यवस्थित रूप में करने से सार्थक परिणाम आएगे।

- आर्य सतीश चड्डा, संयोजक

प्रथम पृष्ठ का शेष

जुलाहे एक खास किस्म की धोती बुनने लगे। इतिहासवेत्ता शिरोल के अनुसार बंगाल के राष्ट्रवादियों के लिए वह वीर शहीद और अनुकरणीय हो गया। विद्यार्थियों तथा अन्य लोगों ने शोक मनाया। कई दिन तक स्कूल बंद रहे और नौजवान ऐसी धोती पहनने लगे जिनकी किनारी पर खुदी राम बोस लिखा होता था।

भारत माता की आजादी के महा समर में अपना सर्वस्व न्योछावर करने वाले, हंसते हंसते फांसी पर झूलने वाले अमर शहीद खुदीराम बोस को बलिदान दिवस पर शत शत नमन।

सभा द्वारा उपयोगी मोबाइल एप्प आज ही डाउनलोड करें

।। ओ३म् ।।
वैदिक यज्ञ प्रतियोगिता
6 वर्ष से 12 वर्षीय वर्ग
परिवारिक : 1. लडके 2. लडकियां 3. गुरुकुलों के ब्रहचारी-ब्रहचारिणियां
प्रतियोगी अकेला यज्ञ करते हुए 3 मिनट की वीडियो
(जल प्रसेचन मंत्रों के पश्चात् से पूर्णाहुति मंत्रों के मध्य की)
केवल हॉरिजॉन्टल फॉर्मेट में वीडियो बनाकर
20 अगस्त 2021 तक मोबाइल नंबर 6390032900 पर भेजें
HORIZONTAL
VERTICAL
वीडियो भेजने की तिथि केवल 15 से 20 अगस्त, 2021
प्रतियोगिता का मूल्यांकन
प्रस्तुति, वेश भूषा, यज्ञ वेदी की साज सज्जा एवं मन्त्र पाठ का शुद्ध उच्चारण, मंत्र पाठ के साथ शारीरिक क्रियाओं का तालमेल, वीडियो की क्वालटी, के आधार पर होगा
पुरस्कार राशि
प्रथम - 3100 रूपये, द्वितीय - 2100 रूपये, तृतीय - 1500 रूपये, प्रोत्साहन - 1000 रूपये
परफ्यूम सेट एवं टॉवल सेट विजेता को उपहार स्वरूप दिया जाएगा
सभी प्रतियोगियों को प्रमाण पत्र दिया जायेगा
पुरस्कारों की घोषणा 28-29 अगस्त 2021 को
केवल आर्य संदेश टीवी पर
www.AryaSandeshTV.com
निवेदक
सुरेन्द्र कुमार रैली कार्यकारीप्रधान
विक्रम नरूला उपप्रधान
ऊषा किरण आर्य उपप्रधान
राजेन्द्र दुर्गा उपप्रधान
कीर्ति शर्मा उपप्रधान
अजय सहगल उपप्रधान
आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य
धर्मपाल आर्य प्रधान
ओमप्रकाश आर्य उपप्रधान
शिवकुमार मदान उपप्रधान
मृदुला चौहान उपप्रधान
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

Makers of the Arya Samaj : Maharishi Dayanand Saraswati

Continue From Last issue

At Hardwar

Swami Dayanand was now thirty-nine years of age. By now his heart burnt with the desire to serve his countrymen and to spread the message of the Vedas everywhere. To do so he visited such places as Agra, Jaipur and Ajmer. Wherever he went he delivered lectures and held debates, but they did not seem to produce much effect.

Two years passed away in this manner. Then Swami Dayanand learnt about a big fair that was to be held at Hardwar. It is known as the Kumbh Fair, and is held once in twelve years. "Here is an opportunity for me." said Swami Dayanand to himself. "I must go to Hardwar and expound my views. Such opportunities do not come very often, so I should not miss it." With this in view he went to Hardwar.

He saw many thousands of people there. All these thought that a mere bath in the Ganges was enough to carry them to heaven. Swami Dayanand felt great pity for them because of their misplaced piety and ignorance. He also saw many sadhus there. They were of all sorts and professed different faiths. Some ofthem were known as Vairagis, that is people who had given up everything. Some were Udasis, people who were indifferent to everything in this world. Some were Nagas, that is, people who went about naked, showing that they did not wish to possess even so much as a piece ofloincloth. Others were Nirmalas, or the people who had purged themselves of everything evil and impure. All these had given up the world.

They had all come there to attain salvation. They thought that the water of the Ganges was sacred and that a bath in it would rid a man of all his sins. So they quarrelled with one another as to who should have the privi lege of entering the Ganges first. The Vairagis said, "We are the followers of Ram a, and Rama is the greatest ofall the gods; we will, therefore, go in first."

The Nagas said, "We will go in first, as we are the most self sacrificing of all the sadhus. We do not even put on a piece of cloth." Thus there was a lot of wrangling among them.

So much for the sadhus. Men ofthe world were equally bad. They also quarrelled with one another for trying to have the privilege of bathing first in the river. In this way many persons were drowned or met with some other kind of death,

.....This is the Guru Dakhshina that I demand of you. The world knows nothing about the Vedas, which are a treasure-house of divine knowledge; you must go all over the country and preach their message to the people. You know that India is full of darkness and ignorance; you must show its people the light of knowledge. The Hindus do not worship the one, true God, but innumerable gods and goddesses. Tell them how wrong it is. Toady Indians follow a large number of religions; you should persuade them to follow the religion preached in the Vedas. Try to abolish all evil customs and teach people the blessings of Brahmcharya or celibacy. The Aryans are in a very miserable plight. Go forth and reform them.....

but they did not mind. On the other hand, they thought that a death ofthis kind was a direct road to heaven. Swami Dayanand felt depressed at all this. Wherever he cast his eyes around, he saw ignorance and superstition. What was he to do under such circumstances? After thinking for a long time he pitched his camp on the road which leads from Hardwar to Rishi Kesh. There he unfurled his flag. It was a flag of revolt and was described as "The flag for the Demolition of Superstition and fraud." This described Swami Dayanand's attitude correctly. He was out to destroy all the superstitions ofthe past. But his message was not merely negative and destructive; it was also positive and constructive.

"Why do you Indians waste your life in idol worship?" he asked. "Worship the one, true God, who has created us all and looks after us all. You will not gain anything by worshipping your gods and goddesses. These things are against the injunctions of the Vedas. You should not imagine that a mere dip in the Ganges can take you to heaven. What determines a man's fate is his actions. 'As you sow, so shall you reap.' Ifit were possible to attain salvation by a mere dip in the Ganges, the fish and the frogs that live in it would long ago have attained it. I exhort you not to be misled by these things. Follow the Vedic religion and you will be worthy of your forefathers."

Such words of truth stirred every body. But though many went to hear Swami Dayanad, none cared to act up to his advice. This made him sad. He felt the truth and force of Swami Virjanand 's remarks that the people ofIndia were sunk in ignorance and had forgotten the real object oftheir life.

But Swami Dayanand was not one of those men who always claim others and not themselves. He felt that

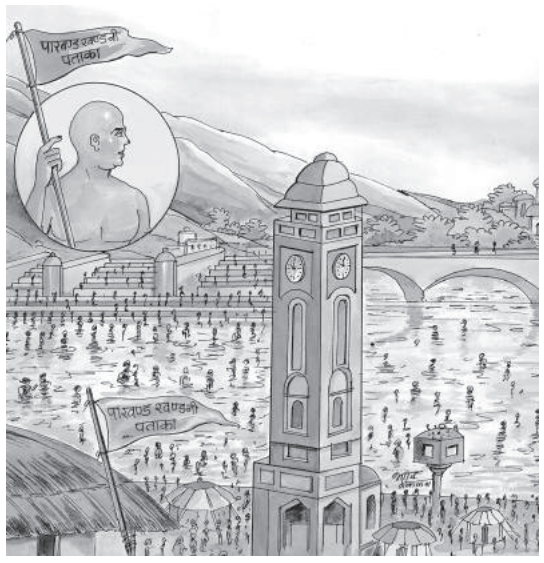

he was not yet equal to his great task. He must practise more aust erities in order to fit himself better for the task. So he once again left Hardwar and went to the forests. But before he did so, he sent a sovereign, some muslim and a copy of his commentary on the Vedas to Swami Virjanand as a humble gift. For himselfhe put off all his clothes and gave up whatever else he had. Then he took a vow of silence, because instead oftalking he wanted to think over the great problems. He also wanted to learn to bear hunger and cold and have the fewest possible needs.

Swami ji underwent this penance for two years. Those days in his life were very hard. He wore no clothes on his body excepting a loincloth. He spent all his time on the snowy peaks of the hills or on the far-off banks ofthe Ganges. He had nothing but the roots and herbs ofthe forest to eat. He spent all his time usefully, meditating on God, and thinking about the problems that faced him. It was this selfdiscipline that stood him in great stead afterwards and gave him his great hold on the people.

Swami Dayanand had very strictly kept his vow of silence all this time, but one day he could not help breaking it. It happened like this. He was sitting all along in a quiet spot when a man went up to him and said, "The Bhagwat Puran is far better than the Vedas." As soon as Swami Dayanand heard it, he felt it his duty to contradict him. So he broke his vow and began to discuss the matter with him.

To be continued.....

With thanks By: "Makers of Arya Samaj"

संस्कृत वाक्य प्रबोध

मिश्रितप्रकरणम्

गतांक से आगे - संस्कृत | **हिन्दी**

351. इदानीं शीतं निवृत्योष्णसमय आगत:। — अब तो शीत की निवृत्ति होकर गरमी का समय आ गया।
352. हेमन्ते क्व स्थित:? — जाड़े में कहां रहा था?
353. बंगेषु। — बंगाल में।
354. पश्य! मेघोन्नतिं कथं गर्जति विद्योतते च। — देखो! मेघ की बढ़ती, कैसा गर्जता और चमकता है।
355. अद्य महती वृष्टिर्जाता यया तडागा नद्यश्च पूरिता:। — आज बड़ी वर्षा हुई जिससे तालाब और नदियाँ भर गईं।
356. शृणु, मयूरा: सुशब्दयन्ति। — सुनो, मोर अच्छा शब्द करते हैं।
357. कस्मात् स्थानादागत:? — किस स्थान से आया?
358. जंगलात्। — जंगल से।
359. तत्रा त्वया कदापि सिंहो दृष्टो न वा? — वहां तूने कभी सिंह देखा था वा नहीं?
360. बहुवारं दृष्ट:। — कई बार देखा।
361. नदी पूर्णा वर्त्तते, कथमागत:? — नदी भरी है, कैसे आया?
362. नौकया। — नाव से।
363. आरोहत हस्तिनं, गच्छेम। — चढ़ो हाथी पर, जायें।
364. अहं तु रथेनागच्छामि। — मैं तो रथ से आता हूँ।
365. अहमश्वोपरि स्थित्वा गच्छेयं शिविकायां वा? — मैं घोड़े पर चढ़ के जाऊँ अथवा पालकी पर?

क्रमश: - साभार :- संस्कृत वाक्य प्रबोध (प्रकाशित-दिल्ली संस्कृत अकादमी)

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा
के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650522778
E-mail : aspt.india@gmail.com

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल या दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। - सम्पादक

-: खेद व्यक्त :-

खेद है कि प्रेस में तकनीकी खराबी होने के कारण आर्यसन्देश साप्ताहिक का गत अंक 37 वर्ष 44 दिनांक 26 जुलाई से 31 जुलाई 2021 प्रकाशित नहीं हो सके। पाठकों को हुई असुविधा के लिए खेद है। - *सम्पादक*

चतुर्वेद शतक महायज्ञ: देश विदेश में गूंजी परमात्मा की वाणी

स्वामी दयानंद ने दिखाया वेद का मार्ग : श्री हरिदेव रामधनी, प्रधान आर्यसभा मॉरिशस

वैदिक संस्कृति का प्रचार प्रसार समस्त आर्यजनों, संन्यासियों और वान प्रस्थियों का प्रमुख कर्तव्य है। ऋषियों के ऋण से उऋण होने का अवसर प्रत्येक वर्ष श्रावणी पर्व पर आता है। वेदों की महिमा प्रतिपादित करने वाले महर्षि दयानंद ने बताया कि वेद मार्ग से ही मानव का कल्याण संभव है। श्रावणी पर्व की वैदिक महत्ता पर उपरोक्त विचार श्री हरिदेव रामधनी जी, प्रधान,आर्य सभा मॉरिशस ने महायज्ञ की पूर्णाहुति पर व्यक्त किए।

अध्यात्म पथ पत्रिका के प्रधान संपादक वैदिक विद्वान आचार्य चंद्रशेखर शास्त्री के ब्रह्मत्व में श्रावणी पर्व के उपलक्ष्य में 28 जुलाई से 1 अगस्त तक ऑनलाइन पंच दिवसीय चतुर्वेद शतक पारायण महायज्ञ का आयोजन किया गया। पूर्णाहुति के अवसर पर बोलते हुए आचार्य चंद्रशेखर शास्त्री ने कहा, वेदवाणी समस्त प्राणिमात्र के कल्याण की वाणी है जो मानव मात्र का प्रत्येक क्षेत्र में मार्गदर्शन करती है।

इस चतुर्वेद शतक पारायण महायज्ञ में 12 देशों के आर्य प्रतिनिधि जूम ऐप के ऑनलाइन माध्यम से जुड़े। समस्त भारत के प्रान्तों से यजमानों ने यज्ञ में आहुतियाँ समर्पित की। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन श्री एसपी कुमार फकीरे दयानंद जी सपत्नीक बेंगलुरु द्वारा किया। ऑस्ट्रेलिया से श्रीमती प्रेम हंस, कनाडा से श्रीमती सरोजिनी जौहर जी आदि गणमान्य विदुषी आर्य महिलाओं ने भाग लिया। इस कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि श्री देवेंद्र यादव विधायक भिलाई और सुश्री नीता लोधी अंत-आवासीय सहकारी समिति एवं वित्त विकास निगम छत्तीसगढ़ शासन राज्य मंत्री ने यज्ञ में श्रद्धापूर्वक आहुतियाँ प्रदान की।

इस अवसर पर अध्यात्म पथ के 15 वर्ष पूर्ण होने पर ३ युवा वैदिक विद्वान डॉ. अजय आर्य (छत्तीसगढ़), श्री जितेन्द्र तायल (फरीदाबाद) एवं श्री अवनीश मैत्रिय (जयपुर) को 'अध्यात्म-रत्न' की उपाधि से विभूषित किया गया।

श्री देवेंद्र यादव, श्री ललित चौधरी, श्री डालेश त्यागी, श्री सुधीर आर्य, श्रीमती कैलाश कालरा, श्रीमती शशि सहगल (कनाडा), श्रीमती लता सरीन (कनाडा) एवं श्रीमती मधु कुमार को 'विशिष्ट मानव रत्न' सम्मान से सम्मानित किया।

इस अवसर पर 50 से भी अधिक पुस्तकों के लेखक आचार्य चंद्रशेखर शास्त्री की नवीन रचना 'महामृत्युंजय मंत्र का अनुष्ठान' पुस्तक का लोकार्पण एवं निशुल्क वितरण किया गया।

- अवनीश मैत्रि:, सह-संयोजक, वैदिक संस्कृति प्रचार संघ, उदयपुर

वैदिक शगुन लिफाफे

महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित सुन्दर डिजाइनों में

सिक्के वाले	बिना सिक्के
मात्र 500/-रु. सैंकड़ा	मात्र 300/-रु. सैंकड़ा

प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें
वैदिक प्रकाशन, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1, मो. 9540040339

निर्वाचन समाचार

आर्य समाज दरियागंज
नई दिल्ली-110002
प्रधान : श्रीमती श्रीबाला चौधरी
मंत्री : श्री गौरव पुरी
कोषाध्यक्ष : श्रीमती शशि प्रभा गुप्ता

आर्य समाज कृष्ण नगर
दिल्ली-110051
प्रधान : श्री राजकुमार शर्मा
मंत्री : श्री विजय भाटिया
कोषाध्यक्ष : श्री विवेक आहुजा

आर्य समाज जहांगीरपुरी
दिल्ली-110033
प्रधान : श्री गिरीश कुमार आर्य
मंत्री : श्री रामभरोसे आर्य
कोषाध्यक्ष : श्री अरविन्द आर्य

प्रेरक प्रसंग

गृहस्थ ने मुझे छोड़ दिया

मुझे अच्छी प्रकार से याद है कि 1949 ई. में मैंने पूज्य महात्मा नारायण स्वामीजी की जीवनी में (आत्मकथा में) यह पढ़ा था कि महात्माजी को अपनी विधवा माता के आग्रह पर बचपन में विवाह की स्वीकृति देनी पड़ी। पन्द्रह वर्ष की आयु में नारायण-प्रसाद (नारायण स्वामीजी का पूर्व नाम) गृहस्थी बन गये, परन्तु पत्नी को पाँच वर्ष तक मायके में ही रक्खा। बीस वर्ष के हो गये तो पत्नी उनके पास आ गई।

महात्माजी ने आत्म-चिन्तन करते हुए निश्चय किया कि पाँच वर्ष पहले गृहस्थी बना हूँ तो दस वर्ष पूर्व अर्थात् चालीस वर्ष की अवस्था में गृहस्थ छोड़ दूँगा। जब नारायणप्रसाद चालीस वर्ष के हुए तो उनकी पत्नी का देहान्त हो गया। आपने स्वेच्छा से गृहस्थ को अभी छोड़ा नहीं था।

महात्माजी ने स्वयं आत्मकथा में लिखा है कि मैंने गृहस्थ को नहीं छोड़ा, गृहस्थ ने स्वयं मुझे छोड़ दिया। इस प्रकार मेरा पुराना संकल्प अपने-आप पूरा हो गया। शब्द चाहे कुछ भी लिखे हों, परन्तु भाव यही है।

कितने सत्यनिष्ठ थे वे लोग! कैसी सरलता से अपनी मन: स्थिति का वर्णन किया है। अपने इसी शुद्ध धर्मभाव से वे ऊँचे उठते गये।

- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

पृष्ठ 2 का शेष

फिलिस्तीन की चिन्ता है अफगानिस्तान ...

अब खबर चलाई जा रही है क्या जीत जायेगा तालिबान, या अफ़गानिस्तान: लश्कर गाह में भीषण जंग, क्या तालिबान को मिलेगी अहम जीत? खबर है अफ़गानिस्तान के हेलमंद प्रांत में तालिबान और अफ़गान सेना के बीच लड़ाई तेज़ हो गई है। तालिबान हेलमंद प्रांत की राजधानी लश्कर गाह में दाखिल हो चुके हैं, जहां उन्होंने सरकारी रेडियो और टेलीविज़न के प्रांतीय कार्यालय पर कब्ज़ा कर लिया है और 20 साल बाद यहां अपना प्रसारण शुरू कर दिया है।

अफ़गान तालिबान के मुख्य प्रवक्ता ज़बीहुल्ला मुजाहिद ने शनिवार को अपने ट्विटर अकाउंट पर दावा किया था कि अफ़गान सेना ने भारत सरकार की तरफ से मुहैय्या कराये गए लड़ाकू विमानों से लश्कर गाह के एक बड़े अस्पताल को निशाना बनाया है।

अब आप सोच रहे होंगे कि तालिबान के मुख्य प्रवक्ता ज़बीहुल्ला मुजाहिद और ट्विटर पर क्या आतंकी भी ट्विटर पर हो सकते है? बिलकुल तालिबान ट्विटर पर हो सकता है लेकिन ये ट्विटर ट्रम्प ट्रंप का अकाउंट स्थायी रूप निलंबित ये कहकर कर देता है कि अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रम्प नफरत फैला रहे है। इनके अनुसार माने तो ट्रम्प नफरत फैलाते है तो ट्विटर से हटाये जाते है लेकिन तालिबान पिछले 25 सालों से अफगानिस्तान में प्यार बाँट रहा है, अफगनियों की बम बंदूकों मोट्रार दाग दाग कर सेवा कर रहा है उसे ट्विटर पर जरुर होने चाहिए इससे इस्लाम मजबूत होगा और भाई चारा फैलेगा।

शायद इसके लिए गाइड लाइन ये है कि फलिस्तीनी आतंकी संगठन हमास पर हमला होगा तो ट्विटर चिल्लाएगा। दुनिया को मुस्लिमों की बेबसी की झूठी तस्वीर परोसेगा लेकिन काबुल में हिंसा होगी बम विस्फोट होंगे तो बरसाती मेंढक की तरह पानी में गोता लगा जायेगा। क्योंकि मुसलमान मुसलमान को मारेगा तो इस्लाम जिन्दा रहेगा लेकिन जब कोई इसराइल हमास पर हमला करेगा या किसी देश की सेना आतंकी बुरहान वानी को मारेगी तो उस सेना का अध्यक्ष गली का गुंडा हो जायेगा। यही साधारण सी नीति है ज्यादा दिमाग लगाने की जरूरत ही नहीं पढ़ी लिखी दुनिया में एजेंडा साफ़ है लेकिन फिर भी लोग इन दिहाड़ी अख़बारों नेताओं और पत्रकारों के गैंग की अफवाहों में बह जाते है।

- सम्पादक

आर्यन अभिनंदन समारोह

हमारे आर्य नेता राष्ट्र निर्माण पार्टी के संस्थापक अध्यक्ष श्री ठाकुर विक्रम सिंह जी का **79वां जन्म दिवस 19 सितम्बर-2021** को ठाकुर साहब अपने परिवार के साथ ही घर पर सादगी से मनाएंगे। कोरोना की वजह से कहीं कोई समारोह नहीं होगा। फिर भी कोरोना महामारी में आर्य प्रचारकों की भी स्थिति को ध्यान में रखते हुए पत्रम-पुष्पम समर्पित करेंगे। अत: आर्य समाज के उपदेशक, भजनोपदेशक, महिला उपदेशक, गुरूकुल अपना **नाम, पता, बैंक में नाम, आईएफएससी कोड एवं एकाउंट नंबर, मोबाइल नंबर, चैक एवं आधार कार्ड की फोटो कापी** आदि लिखकर डाक व ईमेल द्वारा भेज सकते हैं। सभी को पत्रम्-पुष्पम अर्पित किया जाएगा।

-: पता :-
ठाकुर विक्रम सिंह ट्रस्ट
राष्ट्र निर्माण पार्टी
ए-41, द्वितीय फ्लोर, लाजपत नगर-दो, निकट- मेट्रो स्टेशन, नई दिल्ली- 110024
फोन : 011-45791152 Email : rashtranirmanparty@gmail.com

शोक समाचार

श्री तेजपाल सिंह आर्य जी को पत्नीशोक

आर्यसमाज रामनगर रुड़की, हरिद्वार के पूर्व पधान एवं आर्यसन्देश साप्ताहिक के सदस्य श्री तेजपाल सिंह आर्य जी की धर्मपत्नी श्रीमती जसवन्ती देवी जी का दिनांक 8 मई, 2021 को 86 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ किया गया। वे आर्यसमाज के विद्वानों, महात्माओं, अनाथों, गरीबों एवं गौ सेवा में बढ़चढ़कर भाग लेती थीं।

महात्मा प्रज्ञान मुनि जी का निधन

आर्यसमाज चौक माजरा, घरोंड़ा (करनाल) के संस्थापक महात्मा श्री प्रज्ञान मुनि जी का दिनांक 6 अगस्त, 2021 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा दिनांक 8 अगस्त, 2021 को आर्यसमाज मन्दिर सैक्टर-6 करनाल में सम्पन्न हुई।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 9 अगस्त, 2021 से रविवार 15 अगस्त, 2021

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2021-22-2023

LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 12-13/08/2021 (गुरु-शुक्रवार)

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2021-23

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 11 अगस्त, 2021

ओलंपिक खेलों में पदक विजेता एवं सभी खिलाडियों को

आर्य समाज की ओर से बधाई एवं शुभकामनाएं

प्रतिष्ठा में,

टोक्यो ओलंपिक 2020 में भाग लेने वाले 126 खिलाडियों में 71 पुरुष और 55 महिलाएं सम्मिलित थी। भारत के सभी खिलाडियों ने अपनी ओर से शत प्रतिशत खेल दिखाया। आर्य समाज अपने देश के समस्त प्रतिभावान खिलाडियों को बधाई और शुभकामनाएं प्रदान करता है। साथ ही भविष्य में और अधिक सफलता प्राप्त हो ऐसी ईश्वर से प्रार्थना करता है। भारत के खिलाडियों द्वारा प्राप्त मेडलों की संख्या 7 है और भारत विश्व में 48वें नंबर पर रहा है।

लगातार दो बार मेडल जीतने वाली पहली बैडमिंटन खिलाड़ी हैं। सिंधु ने 2016 रियो ओलंपिक में सिल्वर मेडल जीता था। उन्होंने ब्रॉन्ज मेडल मुकाबले में चीनी खिलाड़ी को हराकर मेडल अपने नाम किया।

नीरज चोपड़ा ने टोक्यो ओलंपिक में भाला फेंक में गोल्ड मेडल जीतकर रचा इतिहास। नीरज ने अपने दूसरे प्रयास में 87.58 मीटर की दूरी के साथ पहला स्थान हासिल कर गोल्ड अपने नाम किया। उन्होंने इस ओलंपिक में भारत के लिए पहला गोल्ड जीता है।

भारतीय महिला वेटलिफ्टर मीराबाई चानू ने टोक्यो ओलंपिक की शुरुआत में सिल्वर मेडल जीतकर भारत का खाता खोल दिया था। चानू ने 49 किलोग्राम वर्ग में यह कामयाबी हासिल की। उन्होंने क्लीन एंड जर्क में 115 किलो और स्नैच में 87 किलो से कुल 202 किलो वजन उठाकर पदक अपने नाम किया।

पहलवान रवि दहिया ने टोक्यो ओलंपिक में 57 किग्रा भार वर्ग कुश्ती में सिल्वर मेडल जीता। उन्होंने अपनी कामयाबी से भारत के लिए खाते में दूसरा सिल्वर मेडल जोड़ दिया। उनसे देश को गोल्ड की उम्मीदें थीं, लेकिन वे फाइनल मुकाबले में जीत हासिल नहीं कर पाए।

भारत की स्टार बैडमिंटन खिलाड़ी पीवी सिंधु ने भारत के लिए ब्रॉन्ज मेडल जीतकर इतिहास रचा। वे ओलंपिक में

बॉक्सिंग में भारत की लवलीना बोरगोहेन ने टोक्यो ओलंपिक में भारत को ब्रॉन्ज मेडल दिलाया। उन्होंने शुरुआत में शानदार प्रदर्शन किया, लेकिन सेमीफाइनल में उन्हें हार का सामना करना पड़ा। इसके बावजूद उन्होंने देश के खाते में एक ब्रॉन्ज मेडल जोड़कर देश को गर्वित कर दिया.

पहलवान बजरंग पूनिया ने टोक्यो ओलंपिक में शानदार सफलता हासिल करते हुए फ्रीस्टाइल कुश्ती के 65 किग्रा भार वर्ग में ब्रॉन्ज मेडल जीत लिया। बजरंग ने भारत की झोली में चौथा कांस्य और कुल छठा पदक डाला। बजरंग ने इस मुकाबले में कजाकिस्तान के दौलत नियाबेकोव को हराकर पदक जीता।

भारतीय पुरुष हॉकी टीम ने शानदार प्रदर्शन करते हुए जर्मनी को हराकर ब्रॉन्ज मेडल अपने नाम किया। भारत ने 41 साल बाद ओलंपिक में हॉकी का मेडल जीता है। इससे पहले भारत ने वासुदेवन भास्करन की कप्तानी में 1980 के मॉस्को ओलंपिक में गोल्ड मेडल जीता था। टीम ने इस ओलंपिक में अद्‌भुत प्रदर्शन किया। **सभी को बहुत-बहुत बधाई।**

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह